Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
July-December 2023 4(2), 4541–4545

STUDY OF DR. BHIMRAO AMBEDKAR'S SOCIAL THOUGHTS: SOCIOLOGICAL STUDY

डॉ० भीमराव अम्बेडकर के सामाजिक विचारों का अध्ययन: समाजशास्त्रीय अध्ययन

Sarita Trikoti [1], Mohan Lal Arya [2]

[1]Assistant Professor & Head, Department of Sociology and Social Work, School of Social Sciences, IFTM University, Moradabad (U.P.), India
[2] Acharya, Department of Education, School of Social Sciences, IFTM University, Moradabad (U.P.), India

Corresponding Author
Mohan Lal Arya,
drmlarya2012@gmail.com

DOI
10.29121/shodhkosh.v4.i2.2023.5370

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2023 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

ABSTRACT

English: Baba Saheb wanted to develop a society in which there is an empire of equality, freedom and fraternity. Baba Saheb wanted to create social consciousness among the people but he considered social consciousness to be very important for social development and solution of social problems. According to Baba Saheb, social consciousness is the protector of the rights of the individual. The aim of the social struggle done by Dr. Bhimrao Ambedkar was to end the atrocities on the neglected class, but Baba Saheb wanted that all sections of the society should have equal place in all areas and people of all classes should be given equal opportunities to rise in life. For all these works, Dr. Bhimrao Ambedkar worked hard and diligently. In the research paper, it has been described that how Dr. Bhimrao Ambedkar tolerated untouchability and caste discrimination in the society and how he kept trying to solve this problem. In the presented research paper, the important changes made by Baba Saheb Dr. Bhimrao Ambedkar in the social field have been described.

Hindi: बाबा साहब एक ऐसे समाज का विकास करना चाहते थे जिसमें समानता स्वतन्त्रता और भ्रातृत्व का साम्राज्य हो। बाबा साहब लोगो में सामाजिक चेतना पैदा करना चाहते थे लेकिन सामाजिक विकास एवं सामाजिक समस्याओं के तुधार के लिए वे सामाजिक चेतना को अति आवश्यक मानते थे। बाबा साहब के अनुसार सामाजिक चेतना ही व्यक्ति के अधिकारों का रक्षक है। डॉ० भीमराव अम्बेडकर द्वारा किए गए सामाजिक संघर्ष का उद्देश्य उपेक्षित वर्ग पर होने वाले अत्याधारों को खत्म करना था परन्तु बाबा साहब चाहते थे कि समाज के सभी वर्गों का सभी क्षेत्रों में समान स्थान होना चाहिए और सभी वर्ग के लोगों को जीवन में उपर उठने के समान अवसर दिए जाए। इन सभी कार्यों के लिए डॉ० भीमराव अम्बेडकर जी ने कड़ी मेहनत व लगन से कार्य किया। शोधपत्र में यही वर्णन किया गया है कि डॉ० भीमराव अम्बेडकर ने जिस तरह से समाज में छुआछुत जातीय भेदभाव को सहन करके किस प्रकार से इस समस्या के समाधान हेतू प्रयासरत रहे। प्रस्तुतशोध पत्र में बाबा साहब डॉ० भीमराव अम्बेडकर के सामाजिक क्षेत्र में किए गए अहम बदलावों का वर्णन किया गया है।

Keywords: Dr. Bhimrao Ambedkar, Social Thought, Social Consciousness, Discrimination डॉ० भीमराव अम्बेडकर, सामाजिक विचार, सामाजिक चेतना, भेदभाव

1. प्रस्तावना

प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य महान विद्वान एंव उच्च कोटि के समाज सुधारक एवं सविधान निर्माता बाबा साहब डॉ० भीमराव अम्बेडकर भारत की बीसवीं सदी की एक विशिष्ट विभूति थे। बाबा साहब ने भारत में फैली विभिन्न सामाजिक कुरीतियों को दूर करने के लिए अपना पूरा जीवन समाज सेवा में लगा दिया। बाबा साहब आजीवन समाज सेवा का कार्य कड़ी लगन व मेहनत से करते रहे। डॉ० भीमराव अम्बेडकर द्वारा किया गया प्रथम कार्य (आन्दोलन) समाज सुधार से सम्बधित था। उन्होंने 1920 में एक सामाजिक संगठन बनाने के लिए सभा का आयोजन किया। जिसकी अध्यक्षता स्वयं बाबा साहब डा० भीमराव अम्बेडकर जी ने की। इन्होने हजारों अछुतों की उपस्थिति में 'अत्यंज्य संघ' नामक सामाजिक संगठन की स्थापना की। इस

संगठन को चन्दा इकट्ठा करके बनाया गया था. जो असहाय बच्चों की सहायता करता था।1 डॉ० अम्बेडकर के अनुसार, समाज सेवा राजनितिक से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। क्योंकि समाज सेवा से व्यक्ति का चरित्र बनता है। समाजवाद के विषय में अम्बेडकर जी ने कहा था2 कि मानव समाज में व्याप्त दुख है, जिसे दूर किया जाना चाहिए ताकि लोग सुख से रह सकें। समाज और समाजवाद के संबंध में बातचीत करने से पहले लोगों को अज्ञान तथा निर्धनता के प्रति सद्भाव अपने दिलों-दिमाग में पैदा करना चाहिए। गरीबी एक सामाजिक बुराई है। समाजवादी प्रक्रिया केवल उसी समय सम्भव है. जब प्रशासक उसकी सफलता के लिए कार्य करें। राजनितिक शक्ति ऐसे लोगों के हाथों में नहीं होनी चाहिए जो समाजवादी आदर्शों के खिलाफ हो। बाबा साहब ऐसे समाज के पक्षपर थे जिसमें अधिक से अधिक उत्पादन हो और धन पूंजीपतियों के हाथ में न जाकर धन का समान वितरण हो अर्थात पूंजीपति वर्ग ऐसे समाज के पक्ष में नही है। इस प्रकार बाबा साहब अच्छे समाज के पक्षधर थे।3 बाबा साहब ऐसी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे, जो देश में उपस्थित समस्याओं को समझकर उचित समाधान करना चाहते थे। अम्बेडकर बी०आर०(1945)4 ने अपने ग्रन्थ ‘व्हाट द कांग्रेस एंड गांधी हैव इन टू डू‘ में गाधी जी द्वारा चलाए गए दलित सुधार आंदोलन के समकक्ष लिखकर लोगों का ध्यान खींचा था। इसमें अम्बेडकर ने गांधी द्वारा चलाए गए आन्दोलन का विरोध किया क्योंकि गांधी जी कोई ठोस कदम उठाए बगैर ही दलितों में सुधार लाना चाहते थे। जबकि अम्बेडकर दलितों के हितों तथा उनके अधिकारों के विरुद्ध आवाज उठाकर उनकोआत्मनिर्भर बनाना चाहते थे। इसमे उन्होंने कांग्रेस तथा गांधी जी की दलित सुधार आन्दोलन में किए गए कार्यों की नाकामी को बताया तथा कांग्रेस की दलितों को दबाने की नीति पर भी सवाल उठाया। कीर धंनजय (1962)5 ने अपनी पुस्तक ‘डॉ० अम्बेडकर लाईफ एंड मिशन’ में लेखक ने डॉ० भीमराव अम्बेडकर वो जीवन व कार्यों का वर्णन किया गया है। इसमें बताया गया है कि किस तरह से अम्बेडकर ने एक अस्पृश्य समझी जाने वाली जाति में जन्म लेकर उच्च जातियों के द्वारा किए गए अत्याचारों को सहन किया तथा उनके विरुद्ध आवाज उठाकर दलितों में एकजुटता का संचार किया। इन्होंने दलितों के अधिकारों को प्राप्त करने में दिन-रात एक कर दी। अंत में उन अधिकारों को प्राप्त करने में सफलता भी प्राप्त की। मेहता चेतन (1991)6 द्वारा प्रकाशित पुस्तक श्युग द्रष्टा डॉ० भीमराव अम्बेडकर में लेखक ने बाबा साहब के जन्म, शिक्षा, दलितों के मसीहा, विधि शास्त्री, सविंधान निर्माता, उनका धर्म परिवर्तन, उनकी अन्तिम यात्रा व भारत रत्न प्राप्ति का वर्णन किया गया है। लिमये मधु (1997)7 ने अपनी पुस्तक बाबा साहब अम्बेडकर एक चिन्तन में बाबा साहब को एक सामाजिक क्रान्तिकारी के रूप में दर्शाया है। इसमें बताया गया है कि समाज में उन्होने दलितों के उद्धार व अन्य प्रकार की सामाजिक बुराईयों को खत्म करने के लिए अथक प्रयास किये जिसमें काफी हद तक सफल रहे। इस पुस्तक में बाबा साहब एक जाति संस्था उन्मूलक बाबा साहब व गांधी जी के विचार-विमर्श के साथ-साथ उनकी भारत पाक सम्बन्धी भूमिका, उनके सामाजिक, राजनितिक, आर्थिक एव धर्म परिवर्तन सम्बन्धी घटनाओं का वर्णन किया गया है। रतु नानक चन्द (2005)8 ने अपनी पुस्तक श्बाबा साहब डॉ० अम्बेडकर संस्मरण और स्मृतिया में लेखक द्वारा बाबा साहब के बचपन, शिक्षा उनके द्वारा किए गए सन्देशों, आन्दोलनों बाबा साहब अम्बेडकर के साथ अपने अनुभव एंव स्मृतियों का वर्णन किया गया है। बौद्ध शीलप्रिय (2008) ने अपनी पुस्तक श्पूना पैक्ट क्यों, क्या और किसके लिए में लेखक ने बाबा साहब डा० भीमराव अम्बेडकर द्वारा दलितों की मांग, पूना पैक्ट, गांधी जी द्वारा आमरण अनशन व उसके बाद की स्थिति का बड़ा ही सुन्दर विवरण किया गया है।

अध्ययन का उद्देश्य: प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य महान विद्वान एंव उच्च कोटि के समाज सुधारक एवं संविधान निर्माता बाबा साहब डॉ० भीमराव अम्बेडकर जी के सामाजिक विचारों का अध्ययन करना है।

शोध अभिकल्प: प्रस्तुत अध्ययन वर्तमान शोध अध्ययन वर्णनात्मक, ऐतिहासिक तथा विशलेषणात्मक है। इस अध्ययन के लिए सामग्री को एकत्रित किया गया है। जो द्वितीय स्त्रोत पर आधारित है। विषय से सम्बधित पुस्तकों विभिन्न विद्वानों के लेखों, राजनीतिक जर्नलों नवीनतम अध्ययन की सहायता ली गई है। प्रस्तुत शोध अध्ययन बाबा साहब डा० भीमराव अम्नेडकर जी की मृत्यु के कई दशकों बाद किए जाने के कारण स्वंय अम्बेडकर जी के दर्शनों एवं साक्षात्कार के बिना यह अध्ययन केवल उनके भाषणों, लेखों, कार्यों एंव पुस्तकों तथा सम्बन्धित विषय पर अन्य लेखकों के विचारों पर आधारित है।

2. बाबा साहब डॉ० भीमराव अम्बेडकर जी के सामाजिक विचार

डॉ० भीमराव अम्बेडकर एक महान समाज सुधारक थे। उन्होने स्वर्ण हिन्दुओं के अपमानजनक व्यवहार का जमकर विरोध किया और हिन्दू धर्म की धज्जियां उड़ा दी। वे हिन्दू समाज में छुआ-छूत, जातीय भेदभाव से अत्यन्त दुखी थे और किसी भी कीमत पर इस भेदभाव को समाज से मिटाना चाहते थे। उन्होने दलित वर्गों के लोगों की स्थिति में सुधार लाने हेतू जाति व्यवस्था पर भी प्रहार किया। अछूत समझे जाने वाले लोगों को उन्होने संगठित किया तथा उन्हे समानता का अधिकार दिलाने हेतू आन्दोलनों का नेतृत्व किया। सामाजिक क्षेत्र में डा० भीमराव के मतों तथा उनके कृत्यों का अध्ययन निम्न प्रकार से किया जा सकता है।10 डॉ० अम्बेडकर ने अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद अस्पृश्यता निवारण आन्दोलनों के कर्मक्षेत्र में कूद पड़े, जो उनके जीवन का एकमात्र ध्येय था। बाबा साहब महाराष्ट्र के रानाडे, भंडारकर, तिलक आदि की पंरपरा के विद्वान थे। अस्पृश्य समाज में उनका नाम सर्वाच्च था। उस समय के समाज सुधारकों में भी बाबा साहब का नाम शीर्ष के गिने-चुने व्यक्तियों में था। अस्पृश्यता निवारण आन्दोलनन हिन्दू समाज में महान क्रान्तिकारी आन्दोलन था। इस विचार को सर्वप्रथम महान समाज सुधारक ज्योतिबा फुले ने समझा और इसकी प्रगति के लिए उन्होने यथाशक्तिकार्य किया।

डॉ० भीमराव अम्बेडकर अम्बेडकर ज्योतिबा फुले की परंपरा के क्रान्तिकारी समाज सुधारक थे। उनका अछूतोद्धार आन्दोलन में आगमन समाज क्रान्ति का प्रतीक था।11 21 मार्च 1920 ई० को डॉ० अम्बेडकर ने कोल्हापुर राज्य के मानगांव में अछूतों के एक सम्मेलन की आयक्षता की। सम्मेलन में उपस्थित कोल्हापुर के साहु जी महाराज ने अछुतों को संबोधित करते हुए कहा था, श्अब तुम्हारा नेतृत्व डा० अम्बेडकर कर रहे है, जो तुम्हारे ही समाज से है। मई 1920 के अखिल भारतीय अछुत सम्मेलन में डा० अम्बेडकर ने जोरदार शब्दों में कहा था, 'मैं मानता हूं कि स्वर्ण हिन्दू अछुतों की भलाई के लिए कार्य कर रहे है परन्तु उनकी व्यथा-कथा को वे नहीं जानते, उनका दुख-दर्द एक अछुत ही समझ सकता है, जो स्वंय उनके बीच जनमा हो।12 जुलाई 1924 में बाबा साहब ने एक सामाजिक संगठन बहिष्कृत हितकारिणी समा बनाई। इस सभा का उद्देश्य अछुत भाईयों को यह सन्देश देना था कि उन्हें उद्धार के लिए अपने पैरों पर स्वय खडा होना चाहिए। सन् 1925 में डा० अम्बेडकर ने रत्नागिरी जिले के मालाबार गांव में श्बम्बई अस्पृश्यता परिषद् की स्थापना की। इस परिषद् का उद्देश्य अछुतों में शिक्षा प्रसार, छात्रावास, वाचनालय खोलना, औधोगिक एवं कृषि विद्यालय, सामाजिक सुरक्षा और अस्पृश्यता उन्मूलन आन्दोलन को तेज करना था। अछुतों के उद्धार के लिए बाबा साहब ने 'बहिष्कृत भारत' नामक समाचार पत्र का प्रकाशन भी किया।13

डा० अम्बेडकर ने अपने विचारों को व्यवहारिक रूप दिया। उन्होंने सन् 1927 में महाड सत्याग्रह के दौरान अछुत स्त्री-पुरुष को अपने अधिकारों की पूर्ति के लिए चौवदार तालाब के प्रयोग के लिए उत्साहित किया। स्वंय सत्याग्रही वन सर्वप्रथम तालाब से जल ग्रहण किया जहाँ सदियों से अछूतों पर प्रतिबन्ध लगा था। इसी तरह 1930 में उन्होंने नासिक में मन्दिर प्रवेश अभियान छेडकर कालाराम मन्दिर में पूजा अर्चना करने के अधिकार को प्राप्त किया। इस अछूतोद्धार अभियान ने उस समय गम्भीर रूप धारण किया, जब असमानता, दमन और अन्याय के विचारों पर आधारित मनुसमृति को 25 दिसम्बर, 1927 के दिन बाबा साहब ने जलाकर नये विधान की मांग की ताकि बहुसंख्यक लोगों का जीवन अनुसूचित किया जा सके।14 बाबा साहब ने गोलमेल सम्मेलनों में भी उपेक्षित वर्ग के उद्धार को पक्ष दृढतापूर्वक रखा और उनकी मांगों के लिए अडिग रहे। आखिर पूना समझौते के बाद अछूतों की समस्या को प्रमुखता मिल गई। अस्पृश्यता निवारण के लिए कांग्रेस का आन्दोलन व्यापकर रूप लेने लगा। इसी बीच गांधी जी ने सितम्बर 1932 में श्आखिल भारतीय छुआछूत निवारण संघ की स्थापना की। डॉ० अंबेडकर ने सुझाव दिया कि इस संघ की समितियों में अछूतों का बहुमत होना चाहिए जिनका उद्देश्य परिगणित जातियों के ही आर्थिक, सामाजिक और शैक्षणिक उत्थान तक सीमित रहे।15 जनमानस में नाम कमाने वाले महान भारतीय बिद्वान व छुआछूत निवारण मसीहा डा० भीवराव अम्बेडकर ने 15 अगस्त, 1946 के प्रथम विधि मन्त्री पद की शपथ ली।15 अगस्त, 1947 को भारत आजाद हुआ। काग्रेस ने बाबा साहब के गुणों का सम्मान किया। 29 अगस्त, 1947 को संविधान प्रारूप समिति का गठन किया गया, जिसके आध्यक्ष डॉ० भीमराव अम्बेडकर नियुक्त किए गए। अब अछूतों को समानता का पूरा हक दिलाने का अधिकार मानों कांग्रेस ने उन्हें सौंपा। जिस समानता के लिए बाबा साहब लड़ाई लड़ रहे थे उस कार्य को पूरा करने व अन्याय और समानता को दूरकरने आ अवसर उन्हें मिला।16 अस्पृश्यता विषयक अपराध विधेयक पर 6 सितम्बर 1954 को राज्य सभा में बोलते हुए बाबा साहब ने कहा,17 अस्पृश्यता के प्रति अपराध करने वालों को सजा दिए बिना उन्मूलन नहीं होगा। समाजिक बहिष्कार करने वालो को सजा देनी चाहिए क्योंकि वे अपनी अच्छी स्थिति के कारण देहातों में अस्पृश्यों का बहिष्कार करते है और अस्पृश्यों को संविधान से प्राप्त अधिकारों के उपयोग में द्वेष भावना कर सकते है। ष्इसी कारण संविधान निर्माताओं ने 29 अप्रैल, 1947 को छुआछुत अपराध घोषित किया। संविधान समिति ने सारे विश्व को गरजकर बताया कि अस्पृश्यता की रूढ़ि बंद हो गई है। किसी भी रूप में यह अब शेष नहीं रहेगी। अस्पृश्यता के कारण व्यक्ति पर दुर्बलता लादी गई तो यह गुनाह माना जाएगा।18 अस्पृश्यता और छुआछुत जैसी बुरी कुरूति की तरह ही बाबा साहब जाति प्रथा व वर्ण व्यवस्था के भी घोर विरोधी थे।

डॉ० अम्बेडकर हिन्दु धर्म में व्याप्त चार्तुवर्ण में अछुतों की स्थिति सबसे निचे होने के कारण काफी दुखी थे। गाँधी जी अछूतों के लिए कार्य करते हुए उनकी दयनीय स्थिति में कोई सुधार ना ला सके। इसका मुख्य दोष यही था कि वे हिन्दु धर्म में प्रचलित चातुर्वर्ण में कोई परिवर्तन नहीं करना चाहते थे। इसका सबसे बड़ा सबूत गाँधी जी ने अछूतों को हिन्दु समाज का अभिन्न अंग मानकर इनको श्हरिजनश् नाम दिया।19 डॉ० अम्बेडकर ने गीता व वैदिक वर्ण व्यवस्था को भी गुणकर्मानुसार माना है। गांधी जी के विचारानुसार 'बेटा बाप का ही धन्धा करें' के विरुद्ध बाबा साहब ने कहा कि यह पैतृक व्यवस्था अनिश्चित रूप से जाति भेद का ही समर्थन करती है। डॉ० भीमराव अम्बेडकर जी ने हिन्दु कोडबिल के द्वारा भी सभी हिन्दुओं को एक ही कानून से शासित होने व अन्तर्जातीय विवाह व भोज की वकालत की थी ताकि भेदभाव को पूर्णतः समाप्त करने में एक नए समृद्ध समाज का निर्माण किया जा सकें। बाबा साहब ने इसी भावना से सन् 1948 में एक ब्राहमण महिला सरिता कबीर से शादी कर सामाजिक शिक्षा का प्रसार किया था।20 लेकिन वे जीवन के अन्त तक जाति-पाति के भेदभाव को पूर्णतः समाप्त करने में सफलता हासिल न कर सके। आज भी यह नासूर विकास की गति पर कलक बनकर देश की एकता व अखण्डता की जड़ों को खोखला कर रहा है।

भारतीय समाज में नारी, शिक्षा, समता और स्वतन्त्रता के प्रयास काफी समय से हो रहे थे।21 विभिन्न समाज सुधारकों द्वारा छेड़े गए क्रान्तिकारी आन्दोलनों को आगे बढ़ाने और उसे मूर्त रूप देने के लिए डॉ० अम्बेडकर ने सदियों से चले आ रहे नारी उत्पीड़न और शोषण को समाप्त करने तथा नारी को अन्धेरे से निकालकर प्रकाश की तरफ बढ़ाने का जो रास्ता दिखाया उसके लिए बाबा साहब अंबेडकर प्रशंसा के पात्र है।22

बाबा साहब ने सन् 1942 में अखिल भारतीय दलित समाज का पहला अधिवेशन आयोजित करना तय किया। अधिवेशन में जनसभा को सम्बोधित करते हुए बाबा साहब ने बताया कि उन्होंने अछूतों के स्वतंत्र दल को मान्यता दिलवाने के लिए गोलमेल परिषद से लेकर लम्बे समय तक कड़ी मेहनत करनी पड़ी। आयोजित अधिवेशन की तरफ से बाबा साहब को अभिनन्दन पत्र प्रदान किया गया। बाबा साहब ने इसी अधिवेशन में ''शिक्षित होइए'', आन्दोलन कीजिए और संगठित होइए का सन्देश दिया। उसी मण्डल में दलित वर्गीय महिला परिषद भी आयोजित हुई। लगभग 75000 लोगों की भीड़ में 25000 महिलायें उपस्थित थी। डॉ० अम्बेडकर ने महिलाओं को भी सन्देश दिया कि मैं स्त्री समाज की उन्नति के आधार पर ही समाज की नापतोल

करता हूं। महिलाओं को भी संगठित होना चाहिए, बहनों साफ सुथरी रहिए, मुरी बातों से दूर रहिए,23 लड़कियों को शिक्षा दीजिए। उनके मन में महत्तवाकांक्षा पैदा होनी चाहिए। शादी जल्दी करने की कोशिश न करें। कानून मंत्री बनने पर डी० अम्बेडकर ने केवल दलित वर्ग के लिए नहीं बल्कि सभी वर्गों के उत्थान हेतू हिन्दु कोड बिल तैयार करवाया। हिन्दु कोन बिल के द्वारा पहली बार महिलाओं को पिताजी की जायदात में हिस्सा दिलाने की बात कही गई। हिन्दू कोड बिल के मुख्य बिन्दु निम्न है-‘

महिला का सम्पति में पूर्ण अधिकार।

पुत्रों का भी सम्पति में हिस्सा। झ महिलाओं के लिए भी तलाक का प्रावधान।

कंबल जन्म न कि योग्यता के आधार पर मिले अधिकारों की सम्पति।

बाबा साहब की लगन व पहल के परिणामस्वरूप ही फरवरी 1994 में कोयला खदानों में कार्य करने वाली महिलाएं मजदूर जो पुरुष के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर कार्य करती है,24 उनी पुरुष के समान पगार पाने का अधिकार मिल गया। मजदूरों की कमी को देखते हुए और इस समस्या के समाधान के लिए महिला श्रमिकों को खदान में कार्य करने पर लगा प्रतिबन्ध भी हट गया।25 डॉ० अम्बेडकर ने अपनी मेहनत और संविधान द्वारा शिक्षा के द्वार सभी भारतीयों के लिए खुलवाए। उन्हीं की मेहनत से भारतीय संविधान में सभी बच्चों को चौदह वर्ष की आयु पूरी करने तक निःशुल्क शिक्षा देने का उपबंध किया गया। इसके साथ ही यह उपबन्ध भी किया गया कि राज्य निधि से पूर्णतः किसी भी शिक्षा संस्थान में कोई धार्मिक शिक्षा नहीं दी जायेगी।26 डॉ० अम्बेडकर भारत में फैली हिन्दु धर्मान्धता से भी काफी परेशान थे। वे हिन्दु धर्म को ही समाज में फैली सभी कुरीतियों की जड़ मानते थे। बाबा साहब का मानना था कि हिन्दु धर्म ग्रन्थों ने ही जाति प्रथा, अशिक्षा, अस्पृश्यता और वर्ण व्यवस्था को बढ़ावा दिया है। बाबा साहबका विचार था कि जब इन धर्मशास्त्रों में परिवर्तन हो जाएगा तब समाज में फैले विभिन्न धार्मिक मूल्यों और नियमों में परिवर्तन होना सम्भव है अन्यथा सब ज्यों का त्यो बना रहेगा।27 बाबा साहब का विश्वास था कि हिन्दु नेता व जनता किसी भी प्रकार से अछूतों का उद्धार नहीं चाहते अतः ऐसी स्थिति में हिंदु धर्म से चिपके रहना बेकार है। इसलिए बाबा साहब ने 1935 के येवला सम्मेलन में हिन्दुओं के अमानवीय अत्याचारों के विरूद्ध हिन्दु धर्म छोड़ने की घोषणा कर दी।28

डॉ० अम्बेडकर के धर्मान्तरण की घोषणा के बाद कांग्रेस के सभी नेताओं व गांधी जी ने घोर विरोध किया। गांधी जी ने धर्म को व्यक्तित्व के लिए आवश्यक बताकर ऐसा न करने का प्रस्ताव रखा। डॉ० अम्बेडकर ने प्रस्ताव पढ़.कर कहा कि हमने अभी यह तय नहीं किया कि हम किस धर्म को ग्रहण करेंगे। लेकिन हिन्दु धर्म हमारी तरक्की में साधक नहीं बाधक है। बाबा साहब के विचार से अचंभित एक शिष्ट मण्डल बाबा साहब से मिलने गया। उन्होंने शिष्ट मण्डल से विचार-विमर्श कर दृढ़तापूर्वक कहा- अस्पृश्यों के लिए धर्म परिवर्तन के सिवा दूसरा रास्ता नहीं है।29 डॉ० अम्बेडकर ने साथ ही लोगों को यह भी भरोसा दिलाया कि धर्म परिवर्तन से देश को कोई नुकसान नहीं होगा। बाबासाहब की धर्म परिवर्तन की प्रतिज्ञा एक प्रकार की भविष्यवाणी सिद्ध हुई, क्योंकि अपने परिनिर्वाण से लगभग सात सप्ताह पहले 14 अक्तूबर 1956 को उन्होंनें नागपुर में बौद्ध धर्म को स्वीकार किया। बाबा साहब जीवन में शुरू से ही हिन्दु धर्म के विमुख थे। उनकी धर्म-परिवर्तन की कट्टरता को हम उन्हीं के शब्दों से महसूस कर सकते है। डॉ० अम्बेडकर ने कहा था कि मैं हिन्दु धर्म में पैदा हो गया हूं, यह मेरे बस की बात नहीं थी, किन्तु में किन्तु में हिन्दू धर्म में रहकर नहीं मंरूगा, यह मेरे अपने वश की बात है।30 डॉ० अम्बेडकर द्वारा धर्मानारण का कार्य भी सामाजिक परिवर्तन की दिशा में उठाया गया कदम है। बाबा साहब ने सोच-विचार कर बौद्ध धर्म को स्वीकार किया ताकि उनको इस धर्म में समानता, स्वतंत्रता, बंधुत्व तथा सामाजिक न्याय मिलेगा। इसके साथ ही उन्होंने अपने लाखों बन्धुओं को बौद्ध धर्म की दीक्षा दी।31 बाबा साहब द्वारा बड़ी मेहनत व लगन से तैयार किया गया हिन्दु कोड बिल सभा में पास न हो सका, लेकिन उसके कई भाग बनाकर संसद द्वारा पास करवाया गया। इनमें हिन्दु विवाह विधेयक 1955 व हिन्दु दतक ग्रहण व निर्वाह विधेयक 1956 में पास हुए। बाबा साहब ने जाति-पाति की दुर्भावना को खत्म करने के लिए सहभोज को नहीं बल्कि अन्तर्जातीय विवाह को साधक बनाया है।

महान विद्वान डॉ० अम्बेडकर एक महान् समाजशास्त्री थे। उम्होंने देश को एक विस्तृत संविधान दिया। संविधान के द्वारा उन्होंने देश के हर वर्ग, नारी, श्रमिक, किसान आदि को कल्याणकारी सुरक्षा विधिवत रूप से प्रदान की। फिर भी कुछ लोगों द्वारा अम्बेडकर को केवल दलितों का मसीहा बताकर उनकी महानता को सीमित कर दिया जाता है। चूंकि देश का संविधान बनाने का गौरव भी डॉ० अम्बेडकर जी को ही मिला है। समानता, स्वतंत्रता और बन्धुता को विधिवत रूप से भारत में स्थापित करने वाले महान समाज सुधारक डॉ० अम्बेडकर के कार्यों व प्रयत्नों से आज भी भारतीय शिक्षित नर-नारी पूर्णतः परिचित नहीं है।32

3. निष्कर्ष

इस प्रकार हम निष्कर्ष के रूप में कह सकती है कि डॉ० भीमराव अमर सुप्रसिद्ध समाज सुधारण थे। ते हिन्दु धर्म से नहीं बल्कि हिन्दु धर्म की रूढ़िवादी सोध से घृणा करते थे। ये समाधादी विचारधारा के थे तथा समाज को प्रत्येक सदस्य को समान अधिकार दिलाना चाहते थे। बाबा साहब आजीवन दलितों के उत्थान के लिए लड़ते रहे। उन्होंने भारतीय संविधान में दलितों के लिए आरक्षण की व्यवस्था की तथा समाज से आहत शब्द को मिटाने के लिए छुआछूत को असंवैधानिक ठहराया। अनुसुचित जातियों को देश के सामाजिक वृंच में स्थान दिलाने के लिए अम्बेडकर ने रेम्से मैकडोनाल्ड सरकार के अधीन आयोजित तीसरे तीसरे गोलमेल सम्मेलन 1931 में पृथक चुनाव प्रणाली के मुद्दे को उठाया,परन्तु गांधी के जीवन को बचाने के लिए उन्हें पूना पैक्ट पर हस्ताक्षर करने पड़े तथा संयुका चुनाव प्रणाली को मजबूरी वश स्वीकार करना पड़ा। बाबा साहब यह महसूस करते थे कि वर्ण व्यवस्था ही दलितों की दयनीय स्थिति का मूल कारण है। बाबा साहब ने इसको दूर करने का अथक प्रयास किया। उन्होंने केवल ऐतिहासिक बातों का ही वर्णन

नहीं किया बल्कि अछूत वर्गों का नेतृत्व भी किया तथा उन्होंने इस समस्या के कारणों का भी गहन विश्लेषण किया। अम्बेडकर ने श्जाति-व्यवस्था को स्पष्ट करने की कोशिश की। उनके अनुसार पहले कोई जाति व्यवस्था नहीं थी बल्कि 'मनु' के बाद ही यह व्यवस्था अस्तित्व में आई। उन्होंने जाति व्यवस्था को श्रेणियों की असमानता कहा है। अंत में हम यही कह सकते है कि बाबा साहब डॉ० भीमराव अम्बेडकर एक महान् दलित नेता थे जिन्होनें दलितों को उनके अधिकार दिलाए तथा समाज ने उन्हें गौरव प्रदान किया। इस प्रकार उन्होंने विद्यावित समाज को संगठित करने के लिए जो प्रयास किया, इसके लिए देशवासी हमेशा इसका ऋणी रहेगें।

संदर्भ सूची

सागर एस० एल० (2000) ''डॉ० अम्बेडकर संक्षिप्त जीवन परिचय'', सागर प्रकाशन, मैनपुरी, पु० 07
सर्वेश (2007), अम्बेडकर के विचार समता त्साहित्य सदन नई दिल्ली, पृ० 21
त्रिपाठी सूर्यनारायण (2004). भारत रत्न बाबा साहब डॉ० भीमराव अम्बेडकर, साधना पब्लिकेशन नई दिल्ली,92
अम्बेडकर बी०आर० (1945), व्हॉट दि कांग्रेस एंड गांधी हैव इन टू डू ठक्कर प्रकाशन बाम्बे
कीर धंनजय (1962), डॉ० अम्बेडकर लाईफ एंड मिशन, पापुलर प्रकाशन बाम्बे
मेहता चेतन (1991), युगद्रष्टा डॉ० भीमराव अम्बेडकर मलिक एंड कम्पनी जयपुर
लिमये मधु (1997). बाबा साहब अम्बेडकर एक चिन्तन, ष्आत्माराम एंड संस दिल्ली
रतू नानक चन्द (2005), बाबा साहब डॉ० अम्बेडकर संस्मरण और समृतियाँ. सम्यक् प्रकाशन नई दिल्ली
बौद्ध शीलप्रिय (2008), पूना पैकेट क्यों, क्या और किसके लिए, सम्यक् प्रकाशन नई दिल्ली
नेमा जी०पी० (2007), भारतीय राजनीतिक विचारक, यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन नई दिल्ली, पृ० 4
पुजारी विजय कुमार (2008). डॉ० अम्बेडकर जीवन और दर्शन, सम्यक् प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ० 54
विद्रोही एम०आर० (2004), दलित दस्तावेज, सम्यक् प्रकाशन नई दिल्ली, पृ० 148
सागर एस०एल० (2000), डॉ० अम्बेडकर संक्षिप्त जीवन परिचय, सागर प्रकाशन मैनपुरी, पृ० 2००
जाटव डी०आर० (1996) , डॉ० अम्बेडकर के आलोचक,समता साहित्य जयपुर पृ० 24.
कुबेर डब्ल्यू० एन० (1995), आधुनिक भारत के निर्माता डॉ० भीमराव अम्बेडकर।
पोटोरिया राजेन्द्र (1996), डॉ० अम्बेडकर चित्रमय जीवनी: पृ० 41
कीर धंनजय (1996), डॉ० बाबा साहब अम्बेडकर जीवन चरित्र, पापुलर प्रकाशन प्रा०लि० नई, दिल्ली, पृ० 434
कीर धंनजय (1996), उपरोक्त वही पृ० 342
शास्त्री सोहन लाल (1998), ष्बाबा साहब के सम्पर्क में 25 वर्ष, भारतीय बौद्ध महासभा, दिल्ली प्रदेश बुद्ध बिहार, अम्बेडकर भवन नई दिल्ली, पृ० 229-230
पुजारी विजय कुमार (2008) उपरोक्त वही पृ० 87
महता चेतन (1991), समता के समर्थन अम्बेडकर मलिक एंड कम्पनी जालन्धर, पृ० 31
मेघवाल कुसुम (2005), भारतीय नारी के ब्रेद्धारक डॉ० भीमराव अम्बेडकर सम्पर्क प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ० 139
बाली एल०आर० (1991) उपरोक्त वही पृ० 196
आगवले प्रदीप (2005), ष्महान समाजशास्त्री बाबा साहब डॉ० अम्बेडकर, सम्यक् प्रकाशन नई दिल्ली, पृ० 177
सागर एल०आर० (2000) उपरोक्त वही ५० 15
मून बसन्त (1994), श्राष्ट्रीय जीवन चरित डॉ० बाबा साहब अम्बेडकर नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया, नई दिल्ली.पृ० 98
सागर एस०एल०, डॉ० अम्बेडकर के सम्पर्क में 25 वर्ष पृ० 238
पुजारी विजय कुमार (2008) उपरोक्त वही पृ० 114
मेघवाल कुसुम (2005) उपरोक्त वहीं पृ० 78
मून बसन्त (2001),समता के समर्थक डॉ० अम्बेडकर, नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया, नई दिल्ली पृ० 77
मेहता चेतन (1986), युग द्रष्टा डॉ० भीमराव अम्बेडकर, श्मलिक एंड कम्पनी जालन्धर पृ० 29
बाली एल०आ०२० (1991), डॉ० अम्बेडकर ने क्या किया, ष्भीम पत्रिका, डॉ० अम्बेडकर मार्ग जालन्धर, पृ० 182